ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Language

Topic-

By- नीलम सौंखला

©ISWK

रहीम का जीवन परिचय-: कवि रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना है। इनका जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहौर में हुआ। ये महाराज अक़बर के दरबार के प्रमुख सदस्य थे और लेखन के साथ ही युद्ध की कला में भी माहिर थे। इन्होंने अपने दोहों से समाज को जागृत करने और सही रास्ता दिखाने का काम किया।

वह बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। उनका नाम आज पूरे विश्व में आदर के साथ लिया जाता है। उनके लिखे गए दोहे, कविता इत्यादि को आज स्कूलों में ज्ञान को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

कविता का सारांश

रहीम के दोहे जीवन की वास्तविकता का परिचय तो देते ही हैं, साथ ही प्रेम, त्याग और प्रत्येक परिस्थिति में सहज भाव से जीने की प्रेरणा भी देते हैं। इन दोहों में रहीम ने कहा है कि धन रहने पर तो बहुत से लोग मित्र बनते हैं लेकिन विपत्ति के समय साथ देने वाला ही सच्चा मित्र होता हैं। जाल में मछली के फँसते ही जल उसका मोह छोड़ देता है और मछली जल के बिना जीवित नहीं रह पाती। जिस प्रकार वृक्ष दूसरों के लिए फल और तालाब दूसरों के लिए जल संचित रखते हैं उसी प्रकार सज्जन लोग दूसरों के लिए धन एकत्र करते हैं। निर्धन लोग क्वार के बादल के समान ही होते हैं जो अपने पिछले सुखी दिनों की बात करते रहते हैं। अंत में रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार धरती सहज भाव से हर मौसम की मार को झेल लेती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी हर परिस्थिति का सामना करना चाहिए।

रहीम के दोहे –

कहि ‘रहीम’ संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।(1)
बिपति-कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।(2)
‘रहिमन’ मछरी नीर को तऊ न छाँड़ति छोह॥

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।(3)
कहि रहीम पर काज हित, संपति-सचहिं सुजान॥

थोथे बादर क्वार के, ज्यों ‘रहीम’ घहरात।(4)
धनी पुरुष निर्धन भये, करैं पाछिली बात॥

धरती की सी रीत है, सीत घाम औ मेह।(5)
जैसी परे सो सहि रहै, त्यों रहीम यह देह॥

SuccessCDs

रहीम के दोहे

1. कहि रहीम संपत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

SuccessCDs

2. जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को तऊं न छाँड़ति छोह।।

SuccessCDs

3. तरूवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित संपति — संचहि सुजान।।

SuccessCDs

4. थोथे बादर क्वार के ज्यों रहीम छहरात।
धनी पुरूष निर्धन भएँ, करें पाछिली बात।।

SuccessCDs

5. धरती—की—सी रीत है, सीत धाम़ औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।

Rahim Ke Dohe

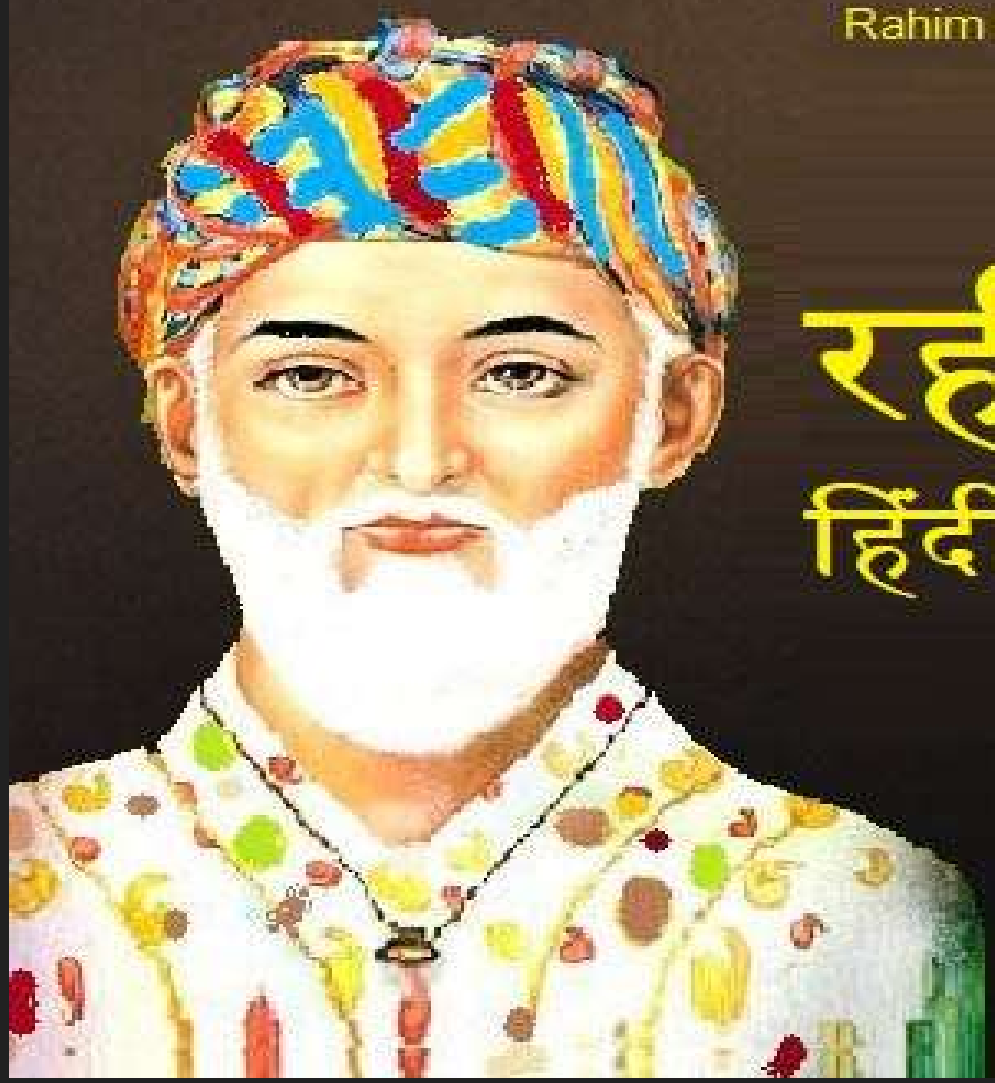

रहीम के दोहे

हिंदी अर्थ सहित...

ज्ञानी पण्डित

1. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ।।1।।

प्रसंग:- रहीम दास जी के दोहे के माध्यम से सच्चे मित्र की परिभाषा को बताया है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब हमारे पास संपत्ति होती है तो लोग अपने आप हमारे सगे, रिश्तेदार और मित्र बनने की प्रयास करते है लेकिन सच्चे मित्र वो ही होते है, जो विपत्ति या विपदा आने पर भी हमारे साथ बने रहते है। वही हमारे सच्चे मित्र होते है उनका साथ हमें कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

शब्दार्थ:- कहि – कहना, संपति – धन, सगे – रिश्तेदार (अपने), बनत – बनते है, रीत – तरीका, बिपति – संकट (कठिनाई), कसौटी जे कसे – बुरे समय में जो साथ में, तेई – वे ही, साँचे – सच्चे, मीत – मित्र (अपने)।

2. जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह ।।2।।

प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने जल के प्रति मछली के एक तरफा प्रेम को दर्शाया है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब मछली पकड़ने के लिए जल में जाल डाला जाता है तो जल बहकर बाहर निकल जाता है। वह मछली के प्रति अपना मोह त्याग देता है लेकिन मछली का प्रेम जल के प्रति इतना अधिक होता है कि वो जल से अलग होते ही अपने प्राण त्याग देती है, यही सच्चा प्रेम है।

शब्दार्थ:- परे – पड़ने पर, जल – पानी, जात- जाता, बहि – बहना, तजि – छोड़ना, मीनन – मछलियाँ, मोह – लगाव, मछरी – मछली. नीर – जल, तऊ – तब भी, न – नहीं, छाँड़ति – छोड़ती, छोह- प्रेम (प्यार)।

3. तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान ।।3।।

प्रसंग:- रहीम दास जी ने इस दोहे में मनुष्य में पाए जाने वाले परोपकार के भाव को प्रकट किया है अथार्थ दूसरों की भलाई करना।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाता सरोवर अपने द्वारा संचित किया गया जल कभी नहीं पीता उसी प्रकार सज्जन और विद्वान लोग अपने द्वारा संग्रह किए गए धन का उपयोग अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई में करते है।

शब्दार्थ:- तरुवर – वृक्ष, नहिं – नहीं, खात – खाना, सरवर – सरोवर (तालाब), पियत – पीते, पान – पानी, कहि – कहते, परकाज – दूसरों के लिए काम, हित – भलाई, सम्पति – धन (दौलत), सचहिं – संग्रह (बचत), सुजान – सज्जन/ज्ञानी।

4. थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात ।।4।।

प्रसंग:- प्रेमदास जी इस दोहे के माध्यम से बताना चाहते है कि मनुष्य निर्धन होने के बाद भी पुराने दिनों के ऐश्वर्य की बातें करते रहते है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार आश्विन के महीने में जो बादल आते है वो थोथे होते है। वे केवल गरजते है लेकिन बरसते नहीं है उसी प्रकार धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने सुख में बिताए हुए दिनों की बातें करता रहता है जिसका वर्तमान में कोई मतलब नहीं होता है। वह अपने सुख में बिताए हुए पलों को याद करते रहते है लेकिन अपनी वर्तमान स्थिति में कोई सुधार नहीं करते है।

शब्दार्थ:- थोथे – खोखले. बादर – बादल, क्वार – आश्विन (सितंबर-अक्टूबर का महीना), ज्यों- जैसे, घहरात – गर्जना, धनी – धनवान, निर्धन – गरीब, भए – हो जाते है, पाछिली – पिछली (पुरानी)।

5. धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।5।।

प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने मनुष्य के शरीर की तुलना धरती से की है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हमारी धरती सर्दी, गर्मी, बरसात के मौसम को एक समान भाव से झेल लेती है। उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वैसे ही क्षमता होनी चाहिए हम जीवन में आने वाले परिवर्तन और सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सकें।

शब्दार्थ:- रीत- ढंग, सीत- सर्दी (ठंड), घाम – धुप, औ- और, मेह- बारिश, परे – पड़ना, सो- सारा, सहि- सहना, त्यों – वैसे, देह- शरीर।

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

(*i*) 'रहीम के दोहे' काव्य-पाठ का कथ्य इनमें से क्या है?

(क) ईश्वर की भक्ति (ख) नीति की बातें

(ग) वीरता का वर्णन (घ) ईमानदारी की बातें।

(*ii*) लोग विविध तरीके से किसी के मित्र कब बनते हैं?

(क) जब व्यक्ति निर्धन हो (ख) जब व्यक्ति सदय हो

(ग) जब व्यक्ति धनवान हो (घ) जब व्यक्ति मुसीबत में हो।

(*iii*) सच्चे मित्र की विशेषता इनमें से क्या है?

(क) सुख में साथ देने वाला (ख) विपत्ति में साथ निभाने वाला

(ग) हमारी हाँ में हाँ मिलाने वाला (घ) हमारे आस-पास रहने वाला।

(*iv*) जाल पड़ने पर पानी क्यों बह जाता है?

(क) मछलियों के पास आने के लिए (ख) मछलियों को अपना महत्व बताने के लिए

(ग) मछलियों से दूरी बनाने के लिए (घ) मछलियों से सच्चा प्रेम न करने के लिए।

(*v*) मछलियाँ जल के प्रति अपना सच्चा प्रेम कैसे प्रकट करती हैं?

(क) पानी के साथ रहकर (ख) अपनी जान देकर

(ग) पानी को जाल से बाहर कर (घ) जाल में स्वयं फँसकर।

(*vi*) पेड़ अपना फल स्वयं क्यों नहीं खाते हैं?

(क) भूख न होने के कारण
(ख) उनके लिए न बना होने के कारण
(ग) परोपकारी स्वभाव होने के कारण
(घ) फल अच्छे न होने के कारण।

(*vii*) सज्जन संपत्ति क्यों एकत्र करते हैं?

(क) दूसरों के कार्यों के लिए
(ख) अपनी सुख सुविधा के लिए
(ग) यज्ञ के लिए दान देते हुए
(घ) संपत्ति एकत्र करना उनका स्वभाव होने के कारण।

(*viii*) किस महीने के बादलों को थोथा बताया गया है?

(क) आषाढ़
(ख) क्वार
(ग) सावन
(घ) भादो।

Ans.

(*i*) (ख) (*ii*) (ग) (*iii*) (ख) (*iv*) (घ)
(*v*) (ख) (*vi*) (ग) (*vii*) (क) (*viii*) (ख)

घर पर रहें
सुरक्षित रहें।

धन्यवाद